एक स्कूल जहाँ सभी विद्यार्थी सुरक्षित, मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण महसूस करते हैं

प्रियंका डी.

गोरावनहल्ली (मद्दुर, कर्नाटक) में स्थित शासकीय उच्चतर प्राथमिक स्कूल (GHPS) के एक भ्रमण के दौरान मैंने देखा कि प्राइमरी कक्षा की एक विद्यार्थी प्रणिता कक्षा में शिक्षिका की भूमिका निभा रही थी। वह अपनी उस शिक्षिका सविता मैम की नक़ल कर रही थी जिसके साथ मैंने कुछ सालों तक नज़दीकी से काम किया था। प्रणिता ने कक्षा में पूछा, "प्रिय विद्यार्थियों क्या आज आप एक नई कहानी सुनने के लिए तैयार हैं? क्या मैं एक कविता से शुरू करूँ या किसी गतिविधि से, आप क्या पसन्द करेंगे?" (उसने हर एक के उत्तर का इन्तज़ार किया)। विद्यार्थियों में से कई उत्तर आए। अनिल ने कहा, "कविता से शुरू करते हैं", प्रीति ने उत्तर दिया, "मैम आपने पिछली बार जो गाना गाया था, क्या उसे सिखा सकती हैं?" बहुत-से दूसरे विद्यार्थियों ने कहा कि वे कोई खेल खेलना चाहते हैं। सभी को सुनने के बाद प्रणिता ने कहा, "आप में से ज़्यादातर लोगों ने जो कहा हम वही करेंगे (ज़्यादातर लोगों ने कहा था कि वे कोई खेल खेलना चाहते हैं)। ठीक है चलो एक खेल खेलें।" फिर एक विद्यार्थी की तरफ़ देखते हुए उसने कहा, "राजेश तुम मेरी बात ध्यान से सुनो, ठीक है मागु (छोटा बच्चा)? क्या तुमने अपने स्कूल मैप प्रोजेक्ट पर काम किया?" राजेश ने उत्तर दिया, "हाँ, लेकिन वह अभी पूरा नहीं हुआ है।" प्रणिता ने उत्तर दिया, "ठीक है कोई दिक्क़त नहीं है, हम उसे शाम को करेंगे।" यह सब इसी तरह तब तक चलता रहा जब तक शिक्षिका आ नहीं गईं। आमतौर पर यह एक सामान्य दृश्य होता है कि विद्यार्थी शिक्षक की अनुपस्थिति में उनकी नक़ल करते हैं – अपनी सत्ता दिखाने के लिए छड़ी ले लेते हैं, शिक्षक की कुर्सी पर बैठ जाते हैं, कड़ी आवाज़ में बोलते हैं और निर्देश देते हैं। लेकिन यहाँ दृश्य अलग था।

इस मामले में पूरी बातचीत में वह विद्यार्थी अपने सहपाठियों को *'मागु'* कहकर बुलाती है, बहुमत के विचारों को आमंत्रित करती है, विनम्र है और उनके प्रयासों की तारीफ़ करती है। वह उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल कर रही थी जो आमतौर से उनकी शिक्षिका इस्तेमाल करती थीं और वह अपनी शिक्षिका की तरह ही व्यवहार कर रही थी। उसका विश्वास था कि सहानुभूतिपूर्ण रवैया होना, निष्पक्षता दिखाना, प्यार से बातें करना, यह सब शिक्षक की विशिष्टताएँ होती हैं।

एक रिश्ते का निर्माण

यह स्कूल शाम को साढ़े पाँच बजे तक खुला रहता है। साढ़े चार बजे के बाद शिक्षक और विद्यार्थी स्कूल के मैदान में जमा होते हैं और विभिन्न तरह की गतिविधियों में शामिल होते हैं। वे गाना गाते हैं, खेल खेलते हैं, गाँव में घट रही घटनाओं के बारे में बात करते हैं और साथ मिलकर प्रोजेक्ट वर्क, क्राफ्ट या होमवर्क करते हैं। तीन एकड़ में फैले इस स्कूल परिसर में शाम को टहलना एक सामान्य गतिविधि है। शिक्षक और विद्यार्थी घूमते हुए पेड़-पौधों का अवलोकन करते हैं। यहाँ 100 से अधिक पेड़ हैं, जिनमें नारियल, कटहल, आम, सागौन, इमली, केला, नीम आदि शामिल हैं। विद्यार्थियों ने कुछ हिस्सों में साग-सब्ज़ियाँ भी उगा रखी हैं।

मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ कि मैंने कुछ शामें इस स्कूल में बच्चों का अवलोकन करते हुए गुज़ारीं। मैंने शिक्षिका से पूछा कि यह सकारात्मक रिश्ता कैसे बना? उन्होंने उत्तर दिया, "अगर विद्यार्थियों को मौक़ा दिया जाए तो वे बात करते हैं और ख़ुद को अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ विद्यार्थी ज़ोर से चिल्लाने, इधर-उधर भागने, सवाल पूछने और मन की किसी भी बात को करने के लिए स्वतंत्र हैं। यहाँ हर शाम अलग होती है और हम नई-नई चीज़ों को करने के लिए तैयार रहते हैं।" वाकई यूँ लगता है कि विद्यार्थी शिक्षिका के साथ सुरक्षित महसूस करते हैं, उन्हें यह भरोसा होता है कि उनकी बात सुनी जाएगी और उन्हें गर्मजोशी का एहसास होता है। वे शिक्षिका के स्कूल से जाने तक स्कूल में रुके रहते हैं। यह रोज़ का व्यवहार बन गया है और माता-पिता यह जानते हैं कि उनके बच्चे स्कूल में सुरक्षित हैं।

जब विद्यार्थी शिक्षिका के पास आपसी लड़ाई-झगड़े के सिलसिले में आते हैं तो वह दोनों तरफ़ की बातें सुनती हैं, कारणों के बारे में पूछती हैं और अपने विचार उनके साथ साझा करते हुए विनम्रता से उनका मार्गदर्शन करती हैं। वह दण्ड देने में विश्वास नहीं करतीं। इसकी बजाय वह, बच्चों ने जो किया है उस पर सोच-विचार करने में उनकी मदद करती हैं। वह कहती हैं, "विद्यार्थी शिक्षिका की वैधता चाहते हैं, इसलिए मैं अपनी भावनाओं को संयमित रखने का पूरा प्रयास करती हूँ और ऐसी कोई बात नहीं करती जो उनके लिए दुखदाई

और चोट पहुँचाने वाली हो।" जब विद्यार्थी उनसे किसी ऐसी चीज़ के बारे में पूछते हैं, जिसके बारे में उन्हें नहीं पता होता तो वह हमेशा बिना हिचकिचाए कहती हैं, "मुझे इसके बारे में नहीं पता, लेकिन कल मैं इसके बारे में पता लगा लूँगी। अगर ऐसा नहीं होता है तो हम सब मिलकर इसका उत्तर तलाशेंगे।" सविता मैम माता-पिता से कहती हैं कि वे नियमित तौर पर अपने बच्चों से पूछें कि वे स्कूल में क्या सीख रहे हैं। उनका मानना है कि इससे विद्यार्थी सीखने के लिए प्रेरित होते हैं।

स्कूल का रूपान्तरण कैसे हुआ?

सविता मैम इस स्कूल में नौ साल पहले आई थीं। तब परिस्थिति ऐसी नहीं थी। विद्यार्थी नियमित स्कूल नहीं आते थे। चूँकि समुदाय का एक बड़ा हिस्सा मुख्यतः कपड़ा फैक्ट्रियों में या दिहाड़ी के रूप में शारीरिक श्रम में लगा रहता है इसलिए वे अपने बच्चों के सीखने पर ध्यान देने में असमर्थ थे। कभी-कभी बच्चे अपने छोटे भाई-बहनों की देख-रेख के लिए घर पर ही रुक जाते थे। सविता मैम विद्यार्थियों के घरों और समुदायों का भ्रमण करती हैं। वह कहती हैं, "विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के बारे में जानना उनके साथ अच्छा रिश्ता बनाने की कुंजी है। और यह भी कि उनके बारे में जितना अधिक हम जानते हैं, उतना हमारा व्यवहार संवेदनशील होता जाता है।"

स्कूल में सुरक्षा के मुद्दे भी होते थे। स्कूल बन्द होने के बाद समुदाय के अज्ञात लोग और बड़ी उम्र के विद्यार्थी स्कूल के परिसर में घुस जाते थे और स्कूल की सम्पत्ति का दुरुपयोग करते थे। वहाँ वे शराब पीने, जुआ खेलने जैसी गतिविधियाँ करते थे। प्रधान शिक्षक, एसडीएमसी के सदस्यों और शिक्षकों ने मिलकर इस मुद्दे का हल निकालने के प्रयास किए। बच्चों को इस समस्या से अवगत कराया गया और उन्होंने अपने माता-पिता को इस बात के लिए मनाया कि वे स्कूल सम्पत्ति को नुक़सान न पहुँचाएँ और स्कूल को सुरक्षित रखने में मदद करें। समुदाय के सहयोग से अन्ततः ये गतिविधियाँ बन्द हो गईं।

इसके अलावा शिक्षकों और प्रधान शिक्षक ने शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए सम्मिलित प्रयास किया। बड़े विद्यार्थियों को मदद के लिए साथ लेते हुए उन्होंने नीचे उल्लिखित पहलें कीं :

- राष्ट्रीय त्योहारों को सार्थक तरीक़े से मनाते हुए आयोजित किया गया। इनमें विद्यार्थी अपने माता-पिता, पंचायत सदस्यों और समुदाय के लिए संवैधानिक मूल्यों पर आधारित नाटक प्रदर्शित करते थे।
- माहवारी के दौरान लड़कियों के साथ होने वाली समस्याओं पर समुदाय की महिलाओं के साथ बैठकें की गईं।
- विद्यार्थियों की सीख को छोटी-छोटी प्रदर्शनियों में नियमित रूप से प्रदर्शित किया गया।
- अधिकांश शिक्षकों ने कई सालों तक कोई भी छुट्टी न लेने का प्रयास किया ताकि अपने विद्यार्थियों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर सकें। इसके परिणामस्वरूप अधिकांश विद्यार्थियों की उपस्थिति 100 प्रतिशत रहने लगी।
- उन विद्यार्थियों की विशेष देखभाल की गई जिनके माता-पिता शराब पीते थे। उनमें से प्रत्येक से नियमित रूप से बात करते हुए यह समझने की कोशिश की गई कि वे घर में और स्कूल में कैसा महसूस करते हैं।

चित्र-1 : *शिक्षिका के मार्गदर्शन में स्कूल के बाहर विद्यार्थी जोड़ों में सीखते हुए।*

बदलाव के दिखाई देने वाले चिन्ह

- पहले माता-पिता विद्यार्थियों को कक्षा के बीच में ही खिड़की के ज़रिए बुला लेते थे (खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती हैं)। लेकिन अब माता-पिता कक्षा में घुसने से पहले अनुमति लेते हैं और खिड़की से विद्यार्थियों को बुलाना पूरी तरह बन्द हो चुका है।
- माता-पिता, शिक्षक-अभिभावक बैठकों, यानी *'समुदायदाता शाले'* [i] बैठकों में, आयोजनों के दौरान स्कूल भ्रमण करते हैं और बच्चों को स्कूल से लाने ले जाने के लिए नियमित तौर पर स्कूल आते हैं। शिक्षक माता-पिता से संवाद रखते हैं और उनके बच्चों के सीखने के बारे में उन्हें जानकारी देते रहते हैं। इन बैठकों के दौरान सिर्फ़ अकादमिक ही नहीं बल्कि ग़ैर-अकादमिक प्रगति को भी उनसे साझा किया जाता है और उनसे चर्चा की जाती है।
- सभी विद्यार्थी स्कूल की सभी गतिविधियों में बिना भय और हिचक के हिस्सा लेते हैं। कोई भी विद्यार्थी छूटता नहीं है। स्कूल, तालुका और ज़िला स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों के भाग लेने से उनके माता-पिता के भीतर स्कूल को लेकर उम्मीद जग गई है। क्लस्टर और तालुका स्तरों पर स्कूल ने लगातार नौ सालों तक *प्रतिभा करंजी* [ii] में शीर्ष ख़िताब जीते हैं।
- विद्यार्थी नेतृत्व की भूमिकाएँ ग्रहण करते हैं और सांस्कृतिक गतिविधियों की योजना बनाते हैं। लगभग सभी विद्यार्थियों ने मंच के कार्यक्रमों में भाग लिया है, जैसे कार्यक्रम का संचालन करना, गतिविधियों की योजना बनाना आदि।
- स्कूल ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया है जहाँ बड़े विद्यार्थी अपने से छोटे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं।
- सुबह की सभा में नियमित रूप से क्विज़ आयोजित किए जाते हैं और बच्चों द्वारा सीखी गई नई-नई चीज़ें साझा की जाती हैं।
- बच्चे एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं, एक-दूसरे के साथ सम्मान से पेश आते हैं और अब गाली-गलौज वाली भाषा का इस्तेमाल नहीं करते।

सविता मैम कहती हैं, "मूल्यों को परस्पर एक-दूसरे से सीखा जाता है। विद्यार्थियों को स्कूलों को उनकी अपनी जगह समझना चाहिए, ऐसी जगह जहाँ उन्हें विकसित होना है, कुछ हासिल करना है और ख़ुश रहना है। स्कूल को बच्चों की मदद इस रूप में करना चाहिए कि बच्चों में आत्मविश्वास विकसित हो और वे ख़ुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। हमारे दृष्टिकोण और विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक रिश्ते इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि वे इस बात को जानें कि हमें उनसे काफ़ी उम्मीदें हैं ताकि वे ज़िम्मेदारी महसूस करें और जैसा वे आज कर रहे हैं उससे बेहतर करें। हम उनसे कैसा व्यवहार करते हैं इसके प्रति हमें बहुत सचेत रहने की ज़रूरत है। विद्यार्थियों को यह याद रहता है कि हम उनके साथ कैसे पेश आते हैं। भविष्य में उन्हें अपने जीवन में इस बात को याद करके ख़ुशी होनी चाहिए। हम उन्हें जो सम्मान देते हैं उसके वे हक़दार हैं।"

यह लेख कर्नाटक के माण्ड्या ज़िले के मद्दूर ब्लॉक में 2018-19 में किए गए एक अध्ययन पर आधारित है।

**बच्चों की पहचान सुरक्षित करने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।*

***चित्र-2 :** प्रत्येक बच्चे को भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और हर एक की बात सुनी जाती है।*

टिप्पणियाँ :

[i]समुदायदाता शाले वह निर्धारित दिन होता है जब शिक्षक, एसडीएमसी सदस्य, माता-पिता और वालंटियर एक साथ बैठकर स्कूल की सुधार-योजना बनाते हैं।

[ii]प्रतिभा करंजी स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक कार्यक्रम है जिसमें क्लस्टर, ब्लॉक, जिला और राज्य स्तरों पर सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

प्रियंका डी. ने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से शिक्षाशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की और 2016 में कैम्पस एसोसिएट के रूप में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में शामिल हो गईं। वर्तमान में वह कर्नाटक के रामनगर ज़िले में फ़ाउंडेशन के काम का समन्वयन कर रही हैं। वे भाषा संसाधन विकास का हिस्सा रही हैं और उन्होंने *कालिका चेतरिके* और *जादुई पिटारा* (NCF-FS) के लिए योगदान किया है। उन्हें शिक्षकों और बच्चों के साथ काम करने, प्रगतिशील कक्षा शिक्षण की योजना बनाने और उसे दर्शाने तथा भाषा से जुड़ी प्रक्रियाएँ सीखने में आनन्द आता है। उनसे Priyanka.d@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय